अध्याय 8

हमारा सामाजिक परिवेश

राहुल और आशीष दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं। एक दिन छुट्टी के बाद वे विद्यालय से घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि कमर झुकाए और सिर पर पोटली रखे एक वृद्ध सड़क पार करने की कोशिश कर रहा था। वह बार–बार अपने कदमों को आगे बढ़ाता, परन्तु वाहनों की रेलम–पेल के बीच उसे लड़खड़ाते हुए वापस लौट आना पड़ता। वे दोनों लड़के जब उसके पास से गुजर रहे थे, तो राहुल ने उसका मजाक बनाते हुए कहा –''अरे! मरेगा क्या ? इधर ही खड़ा रह।'' परन्तु आशीष ने विनम्रता से कहा– ''बाबा ! मैं आपको सड़क पार करवाता हूँ।''आशीष ने वृद्ध को सड़क पार करवा दी।

वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार करने में मदद करता बालक

आशीष को सेवा व एक–दूसरे की मदद करने की यह शिक्षा उसे अपने परिवार से प्राप्त हुई थी।

परिवार

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। हम में से हर कोई एक परिवार में पैदा हुआ है। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार ही होता है। जहाँ उसमें स्नेह, दया, सहयोग, सहकार, क्षमा आदि गुणों का विकास होता है। बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सत्कार करना तथा सभी के साथ मिल–जुल कर रहना बालक परिवार में रहकर सीखता है। व्यक्ति समाज की परम्पराएँ व संस्कार भी परिवार में रहकर सीखता है। समाज में मिलजुल कर रहने की शिक्षा बालक को परिवार से मिलती है। परिवार हमारे जीवन का अभिन्न अंग है।

आप अपने घर में अपने माता–पिता और भाई–बहनों के साथ रहते हो। यह आपका परिवार है। इस प्रकार का परिवार 'एकल परिवार' कहलाता है। एकल परिवार का अर्थ है–विवाहित युगल और उनके बच्चे। हो सकता है आपके दादा–दादी, ताऊ–ताई, चाचा–चाची, बुआ आदि भी आपके साथ रहते हों। ऐसा परिवार जिसमें उक्त सभी एक साथ रहते हैं, वह 'संयुक्त परिवार' कहलाता है।

एकल परिवार

संयुक्त परिवार

परिवार में सभी सदस्य मिलजुल कर रहते हैं और सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। घर के सभी सदस्य मिलजुल कर घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी निभाते हैं। आप भी घरेलू कार्यों में अपने परिवार का सहयोग करते होंगे। परिवार के युवा व बड़े सदस्य आर्थिक साधन जुटाने की जिम्मेदारी भी उठाते हैं।ये लोग खेती, नौकरी या व्यापार आदि विभिन्न कार्यों में संलग्न रहते हैं। वर्तमान समय में महिलाएँ पुरूषों के समान नौकरी, व्यापार आदि कार्यों में बराबरी से अपनी भूमिका निभा रही हैं। हो सकता है कि आपकी माँ घर से बाहर काम करती हों, या घर पर रह कर ही आर्थिक सहयोग का कोई काम करती हो। हम देखते हैं कि गाँवों में स्त्रियाँ घरेलू कार्यों के साथ–साथ ही पुरुषों के साथ कृषि एवं पशुपालन का कार्य भी करती हैं। परिवार के बच्चे भी इन कामों में बड़ों की सहायता करते हैं। इस प्रकार घर के सभी सदस्य अपनी क्षमता अनुसार सहयोग करते हैं।

गतिविधि :

आप अपने परिवार में कौन–कौन से कार्य करते हैं ? उनकी एक सूची बनाइए।

भारत में सामान्यतः संयुक्त परिवार प्रथा का ज्यादा प्रचलन रहा है। बदलते सामाजिक परिवेश में संयुक्त परिवारों का स्थान एकल व छोटे परिवार लेते जा रहे हैं। वर्तमान समय में यह देखा जाता है कि शिक्षा, रोजगार एवं बेहतरीन जीवन की तलाश में व्यक्ति अपने माता–पिता और दादा–दादी से अलग होकर अन्य स्थानों की ओर पलायन करते हैं। इस कारण से संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं।

संयुक्त परिवार का अपना अलग ही महत्त्व होता हैं। बच्चे घर में माता–पिता एवं दादा–दादी के

व्यवहार को देखकर बडों का आदर करना और छोटों को स्नेह करना सीखते हैं। घर के बड़े बुजुर्गों के पास जीवन का अनुभव होता है, जिनका लाभ अन्य सदस्यों को मिलता है। जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान में ये अनुभव बहुत काम आते हैं। दादी–नानी का प्यार और उनकी कहानियाँ तो जीवन भर याद आती हैं। बड़ों के संरक्षण में परिवार के सभी सदस्य निश्चिन्त और आनन्दित रहते हैं।

बच्चों ! हमें बड़े बुजुर्गों का आदर करना चाहिए और उनके अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए।

परिवार में पारस्परिक निर्भरता

परिवार के सदस्य सुख–दुख और परेशानी में एक–दूसरे के काम आते हैं। बच्चों की किलकारियाँ, बाल सुलभ चेष्टाएँ और जिज्ञासाएँ परिवार को आनन्द देती हैं। कुछ बड़े होने पर बच्चे बड़ों के कार्यों में सहयोग देते हैं। भाग–दौड़ के ऐसे काम जिनसे बड़े थक जाते हैं, उन्हें बच्चे खेल–खेल में ही पूरे कर देते हैं। हम देखते हैं कि परिवार के सभी सदस्यों का स्वभाव और रूचि अलग–अलग होते हुए भी वे एक साथ रहते हैं।

गतिविधि :

आप अपने परिवार के निम्नलिखित सदस्यों पर किस प्रकार निर्भर हैं ? चर्चा करके इस तालिका को पूरा कीजिए :–

क्र.स.	परिवार के सदस्य	वे कार्य जिनके लिए आप इन पर निर्भर हैं
1	माता	
2	पिता	
3	भाई	
4	बहिन	
5	दादा	
6	दादी	

हमारे पड़ोसी

राम और मोहन के परिवार सीतापुर नाम के गाँव में रहते हैं। दोनों परिवार एक दूसरे के पड़ोसी हैं। राम का परिवार गरीब है, तो मोहन का परिवार कुछ सम्पन्न है। उसके खेत बड़े हैं और उसके पास एक ट्रेक्टर भी है। डॉक्टर उस गाँव से आठ किलोमीटर दूर बदलापुर गाँव में ही उपलब्ध है। एक दिन आधी रात के लगभग राम के बेटे के पेट में अचानक दर्द हुआ। जब पड़ोसी मोहन को इस बात की जानकारी हुई, तो वह उस लड़के को अपने ट्रेक्टर से बदलापुर में डॉक्टर के पास ले गया।

बच्चो ! परिवार के सदस्यों के बाद हमारे सबसे निकट हमारे पड़ोसी होते हैं। अच्छे पड़ोसी मिल–जुल कर रहते हैं और सुख–दुख में एक दूसरे के काम आते हैं। आनन्द के अवसर पर पड़ोसी मिलकर आनन्द को बढ़ाते हैं। दुखः–दर्द का समय भी पड़ोसियों के सहयोग से आसानी से गुजर जाता है। अतः छोटी–छोटी बातों पर ध्यान न देते हुए सभी पडोसियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने चाहिये।

जहाँ परिवार सामाजिक जीवन की प्रथम पाठशाला है, वहीं कुछ बड़ा होने पर बालक विद्यालय जाने लगता है। विद्यालय में प्रधानाध्यापक, अध्यापक तथा अन्य कर्मचारी होते हैं। इन सभी के सहयोग से वह विद्यालय में पढ़ाई का काम व्यवस्थित तरीके से करता है।

सोचिए ! यदि विद्यालय का सहायक कर्मचारी कमरों की सफाई न करे या समय पर घण्टी न बजाए तो आपको कितनी परेशानी होगी ? यदि आपके अध्यापक जी बीमार हो जाये और आपका पाठ्यक्रम पूरा न हो पाए तो क्या आप अच्छे अंको से उत्तीर्ण हो पाओगे ? अतः सभी का कार्य महत्त्वपूर्ण होता है। सबके आपसी सहयोग से ही विद्यालय में व्यवस्थित तरीके से पढ़ाई चल सकती है। विद्यार्थियों को भी अनुशासित रहना आवश्यक है। कक्षा के होशियार बच्चों को कमजोर सहपाठियों की सहायता करनी चाहिए।

सोचिए ! क्या होगा, यदि–

1. आपके गाँव का एकमात्र डॉक्टर लम्बे समय के लिए बाहर चला जाए ?
2. किसान को फसल काटने के लिए मजदूर न मिलें ?
3. नाई बाल काटना बंद कर दे ?
4. कुम्हार मटके बनाना बंद कर दे ?
5. व्यक्ति अकेले जीवन यापन करना शुरू कर दे ?

हमारा समाज

व्यक्ति का परिवार और पड़ोस के अलावा समाज के अन्य सदस्यों व संस्थाओं से भी बहुत काम पड़ता है। समाज में सभी व्यक्ति अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार अलग–अलग कार्य करते हैं। किसान खेती करता है। कुम्हार, लुहार, सुनार, दर्जी– ये सभी समाज के लिए आवश्यक कुछ–न–कुछ वस्तुओं का निर्माण करते हैं। कुछ लोग नौकरी करते हैं, तो कुछ व्यापार में लग जाते हैं। अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि समाज को अपनी सेवाएँ देते हैं। पुलिस, प्रशासन, न्याय आदि से जुड़े लोग समाज में शान्ति एवं व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाते हैं। इन सभी लोगों के कार्यों से हमारा जीवन सुखमय बनता है। समाज के सदस्य इन कामों को एक दूसरे पर आश्रित रहकर तथा परस्पर सहयोग के द्वारा संपूर्ण समाज के कल्याण के लिए सम्पन्न करते हैं।

गतिविधि :

आपके घर अथवा विद्यालय भवन के निर्माण में किन–किन व्यवसायों से जुड़े हुए व्यक्तियों का सहयोग लिया गया है – उनकी एक सूची बनाइए।

एक ओर जहाँ गाँवों में उत्पन्न अनाज शहरों में लाया जाता है और कुछ कारखानों को कच्चा माल भी खेती से ही प्राप्त होता है, जैसे–सूती वस्त्र मिलों को कपास, चीनी मिलों को गन्ना आदि। वहीं दूसरी ओर शहरों में निर्मित विभिन्न औद्योगिक उत्पाद, जैसे–चीनी, दवाईयाँ, मशीनें आदि गाँवों में ले जाकर बेचे जाते हैं। गाँवों और शहरों का जीवन एक–दूसरे के सहयोग पर ही निर्भर है।

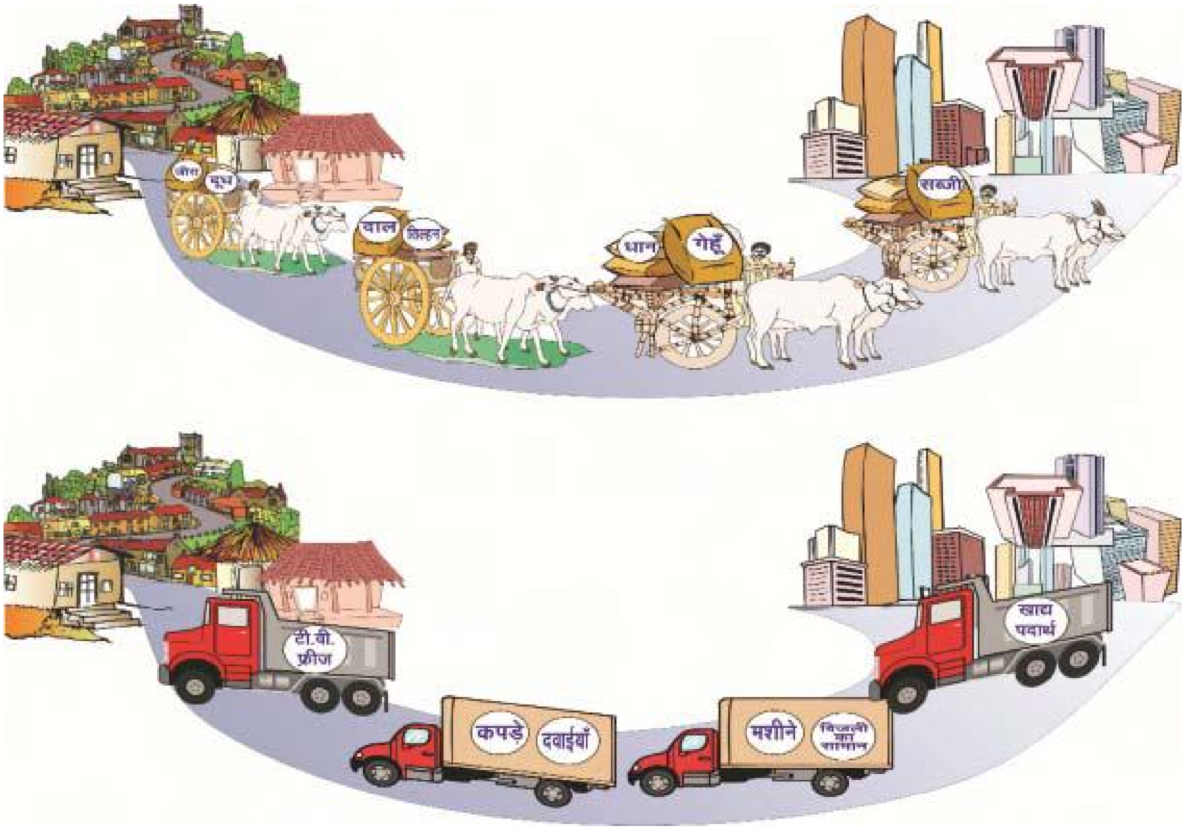

गाँव और शहर में परस्पर सहयोग

समाज हमारे शरीर की तरह होता है। जिस प्रकार हमारे शरीर के सभी अंग शरीर के लिए काम करते हैं, उसी प्रकार समाज के सभी व्यक्तियों के सहयोग से ही समाज में पूर्णता आती है और लोग सुख–शान्ति से रहकर प्रगति कर सकते हैं। हम सभी एक दूसरे के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने हमारे शरीर के लिए हमारे सभी अंग। हम अकेले सुखी नहीं हो सकते।

अब तक आप समझ गए होंगे कि हमारा जीवन परस्पर व्यक्तियों एवं समाज जैसी संस्थाओं के सहयोग पर ही निर्भर है। इन सभी में तालमेल बना रहना आवश्यक है तब ही समाज सुखी रह सकता है। अतः व्यवस्था बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। जिस प्रकार परिवार की कुछ परम्पराएँ होती हैं, ठीक वैसे ही समाज के भी कुछ नियम होते हैं। नियमों का पालन करने से ही समाज में व्यवस्था बनी रहती है।

शब्दावली

सामाजिक संस्थाएँ : विवाह, परिवार, जाति इत्यादि समाज द्‌वारा मान्य संस्थाएँ।

परिवार : सामान्यतः एक विवाहित युगल और उनके बच्चों से मिलकर परिवार बनता है।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –

 (i) हमारी प्रथम पाठशाला है –

 (अ) परिवार (ब) विद्यालय (स) समाज (द) पड़ोसी ( )

 (ii) समाज की सबसे छोटी इकाई है –

 (अ) विद्यालय (ब) अस्पताल (स) परिवार (द) जाति ( )

 (iii) परिवार के सदस्यों के बाद हमारे सबसे निकट होते हैं –

 (अ) रिश्तेदार (ब) पड़ोसी (स) मित्र (द) कर्मचारी ( )

2. परिवार में रहकर व्यक्ति क्या–क्या सीखता है ?

3. एकल परिवार व संयुक्त परिवार में क्या अन्तर है ?

4. हमें घर के बड़े–बुजुर्गों से कौनसे लाभ प्राप्त होते हैं ?

5. पड़ोसियों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ?